Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
March 2024 5(3), 2050–2055

RELEVANCE OF ACHARYA RAJNEESH'S EDUCATIONAL PHILOSOPHY IN THE CURRENT CONTEXT

वर्तमान सन्दर्भ में आचार्य रजनीश के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता

Ashok Sidana [1], Hemant Kumar Haldainiya [2]

[1] Professor and Dean, Department of Education, Apex University, Jaipur, Rajasthan, India
[2] Research Scholar, Department of Education, Apex University, Jaipur, Rajasthan, India

ABSTRACT

English: Acharya Rajneesh was a person who was seen seeking knowledge in everything since childhood. Acharya Rajneesh has given great importance to the freedom of the individual. Acharya Rajneesh's philosophy is simple and unique. His thinking is different from other philosophers. He is known as an important philosopher not only in India but all over the world. In his philosophy, Acharya Rajneesh has presented his views on religion, politics, science, education, sex and women, Krishna, Kabir, Nanak and Mahatma Buddha. Acharya Rajneesh traveled all over India during his teaching period. Acharya Rajneesh was against socialism. He believed that the progress of India is possible only through capitalism, science, technology and reducing the birth rate. As a spiritual guru, he traveled from place to place and presented his views on various aspects. In a meditation camp organized for the public in 1970, Acharya Rajneesh first told about the “Dynamic Meditation Method”. Acharya Rajneesh revived “Samyak Sanyas” in his philosophy. In his view, a sannyasi is one who lives a life of meditation and satsang while fulfilling his familial and social obligations while living with his family, wife and children. Acharya Rajneesh gave new meaning to the mystics, philosophers and religious ideologies of the whole world in his teachings. He has shed light in detail on the mystics of various spiritual traditions like Yoga, Tantra, Zen, Hasid and Sufi. Along with this, his revolutionary life vision is also found on many subjects like politics, art, science, psychology, philosophy, education, family, society, poverty, population explosion, environment and possible nuclear war. In this article, the educational philosophy of Acharya Rajneesh sheds light on the inspiration of a conscious, self-conscious and blissful life.

Hindi: आचार्य रजनीष एक ऐसे व्यक्ति थे जो बचपन से ही हर चीज़ में ज्ञान की तलाश करते दिखाई देते थे। आचार्य रजनीष ने व्यक्ति की स्वतंत्रता को बहुत महत्व दिया है। आचार्य रजनीष का दर्शन सरल और अनूठा है। उनकी सोच अन्य दार्शनिकों से अलग है। उन्हें न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में एक महत्वपूर्ण दार्शनिक के रूप में जाना जाता है। अपने दर्शन में, आचार्य रजनीष ने धर्म, राजनीति, विज्ञान, शिक्षा, यौन और स्त्री, कृष्ण, कबीर, नानक और महात्मा बुद्ध पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। आचार्य रजनीष ने अपने शिक्षण काल के दौरान पूरे भारत का भ्रमण किया। आचार्य रजनीष समाजवाद के खिलाफ थे। उनका मानना था कि भारत की प्रगति पूंजीवाद, विज्ञान, तकनीक और जन्म दर को कम करके ही संभव है। एक आध्यात्मिक गुरु के रूप में, उन्होंने जगह-जगह यात्रा की और विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार प्रस्तुत किए। 1970 में जनता के लिए आयोजित एक ध्यान शिविर में, आचार्य रजनीष ने पहली बार “गतिशील ध्यान पद्धति“ के बारे में बताया। आचार्य रजनीष ने अपने दर्शन में “सम्यक संन्यास“ को पुनर्जीवित किया। उनके विचार में, एक संन्यासी वह है जो अपने परिवार, पत्नी और बच्चों के साथ रहते हुए अपने पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों को निभाते हुए ध्यान और सत्संग का जीवन जीता है। आचार्य रजनीष ने अपनी शिक्षाओं में पूरी दुनिया के मनीषियों, दार्शनिकों और धार्मिक विचारधाराओं को नया अर्थ दिया। उन्होंने योग, तंत्र, ज़ेन, हसीद और सूफी जैसी विभिन्न आध्यात्मिक परंपराओं के मनीषियों पर विस्तार से प्रकाश डाला है। इसके साथ ही, राजनीति, कला, विज्ञान, मनोविज्ञान, दर्शन, शिक्षा, परिवार, समाज, गरीबी जैसे कई विषयों पर उनकी क्रांतिकारी जीवन दृष्टि भी मिलती है। जनसंख्या विस्फोट,

Corresponding Author

Hemant Kumar Haldainiya,
haldainiyahemant1990@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i3.2024.6187

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

पर्यावरण और संभावित परमाणु युद्ध। इस लेख में, आचार्य रजनीष का शैक्षिक दर्शन एक सचेतन, आत्म-चेतन और आनंदमय जीवन की प्रेरणा पर प्रकाश डालता है।

Keywords: Acharya Rajneesh, Educational Philosophy, Life, Meditation, Education, Teacher, Student, आचार्य रजनीष, शैक्षिक दर्शन, जीवन। ध्यान, शिक्षा, शिक्षक, छात्र

1. प्रस्तावना

आचार्य रजनीश एक समकालीन दार्शनिक विचारक हैं। दार्शनिकों में आचार्य रजनीष का विशिष्ट स्थान है। आचार्य रजनीष सचमुच एक “विश्वगुरु“ थे। जिस तरह उनके अनुयायी दुनिया भर में फैले हुए हैं और उनका दर्शन किसी राष्ट्र की सीमाओं तक सीमित नहीं, बल्कि संपूर्ण विश्व के लिए है। अपने युग में आचार्य रजनीष की सोच और दृष्टि वैश्विक रही है। शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति के लिए, चाहे वह विद्यार्थी हो, अभिभावक हो, शिक्षक हो, प्रधानाचार्य हो या पाठ्यक्रम निर्माता हो, आज ऐसे अच्छे प्रकाश के शैक्षिक तत्वों को जानना अत्यंत आवश्यक है, जैसे आचार्य रजनीष किस प्रकार की शिक्षा प्रणाली चाहते थे, शिक्षा के बारे में उनकी अवधारणा क्या है और इसके उद्देश्य क्या हैं, वे किस प्रकार का पाठ्यक्रम चाहते हैं। विद्यालय के बारे में उनकी अवधारणा क्या है? उनके अनुसार, आधुनिक युग में शिक्षक और विद्यार्थी के बीच संबंध कैसा होना चाहिए? अनुशासन के बारे में उनके क्या विचार हैं? महिला शिक्षा का क्या महत्व है और एक शिक्षक में क्या गुण होने चाहिए? इन सभी प्रश्नों के साथ, क्या वर्तमान समय में आचार्य रजनीष की शैक्षिक अवधारणा की कोई प्रासंगिकता है? क्योंकि आचार्य रजनीश (आचार्य रजनीष) एक संन्यासी हैं। आचार्य रजनीष के अनुसार, शिक्षा हमारे वास्तविक स्वरूप को हमारे दैनिक जीवन में उतारने का एक साधन है।

सच्ची शिक्षा मुक्तिदायक होती है, यह व्यक्ति को अतीत, विचारधाराओं, आदर्शों से मुक्त करती है, उसे सत्य से परिचित कराती है और उसके भीतर छिपी क्षमताओं को उजागर करके उसे व्यक्तिगत रूप से विकसित होने में सक्षम बनाती है। शिक्षा व्यक्ति को निडर, साहसी और विद्रोही बनाती है। आचार्य रजनीष के अनुसार, एक शिक्षक को अपने विद्यार्थी की गलतियों को तभी सुधारना चाहिए ृजब वह गलत रास्ते पर जा रहा हो, उसे अपनी परंपरा, नैतिकता और

पूर्वाग्रह के अनुसार नहीं सुधारना चाहिए। शिक्षक को प्रेम और करुणा के साथ विद्यार्थी को सही मार्ग पर ले जाना चाहिए। विद्यार्थियों की ऊर्जा को मुक्त करें, उन्हें निडर बनाएँ और उन्हें प्रश्न पूछने का साहस दें। उन्हें अपने प्रश्नों के उत्तर स्वयं खोजने में मदद करें। पहले से तैयार उत्तर न दें। आचार्य रजनीष ने प्रेम के साथ-साथ ध्यान को भी एक महत्वपूर्ण तत्व माना है।

स्वामी जी बताते हैं कि आचार्य रजनीष ने ध्यान को अध्यात्म से नहीं जोड़ा है, बल्कि इसे जीवन जीने की कला माना है। आचार्य रजनीष ने लोगों को गतिशील ध्यान के प्रति जागरूक किया। आचार्य रजनीष का मानना था कि एक विद्यार्थी के लिए एकाग्रता हेतु ध्यान सबसे ज़रूरी तत्व है। इससे बच्चे का मन विभिन्न दिशाओं में भटकने से बचेगा और वह अपने जीवन में ध्यान को अपनाकर शिक्षा में अपनी रुचि बढ़ा सकता है। उनका मानना था कि बच्चे के जीवन में ध्यान को अपनाने से पहले, उसके माता-पिता को स्वयं अपने जीवन में ध्यान को अपनाना होगा। केवल माता-पिता ही बच्चे के मन में ध्यान के प्रति रुचि पैदा कर पाएंगे। आचार्य रजनीष कहते थे कि जब बच्चा सुबह स्कूल जाता है, तो वहाँ ध्यान करना अनिवार्य है। ध्यान के लिए लगभग 30 मिनट का समय होना चाहिए।

उन्होंने ध्यान को विभिन्न आयामों में रखा। यहाँ आचार्य रजनीष का तात्पर्य शांत मुद्रा में बैठकर ध्यान करने से नहीं है, बल्कि संगीत और नृत्य के माध्यम से भी ध्यान किया जा सकता है। वे कहते थे कि ध्यान केवल विद्यार्थियों के लिए ही नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण है। ध्यान ही जीवन में विचारशून्यता तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग है। आचार्य रजनीष ने ध्यान की विधियाँ बताई हैं। ये विधियाँ सरल हैं। इन्हें आसानी से सीखा जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन कम से कम 45 मिनट ध्यान करना चाहिए। आचार्य रजनीष कहते हैं कि व्यक्ति के भीतर ऊर्जा का भंडार होता है। यदि वह इस ऊर्जा का सही दिशा में उपयोग करे, तो उसे परम आनंद की प्राप्ति हो सकती है। वे प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रतिदिन कम से कम 10 मिनट का मौन आवश्यक मानते थे। स्वामी जी ने बताया कि आचार्य रजनीष कहते थे कि जो व्यक्ति केवल जीत सकता है, वह पूर्ण मनुष्य नहीं है। क्योंकि जीवन के कुछ आयाम ऐसे होते हैं जो हारने वाले को भी मिलते हैं। जो जीतता है उसे संसार मिलता है, जो हारना जानता है उसे ईश्वर मिलता

है। जो जीतता है उसे धन मिलता है, जो हारता है उसे प्रेम मिलता है। हार की भी अपनी जीत होती है, लेकिन गणित और तर्क हमें सिर्फ़ जीतना सिखाते हैं, ध्यान हमें हारना सिखाता है। गणित और तर्क हमें अपनी संपत्ति बढ़ाने, अपनी संपत्ति बढ़ाने, अपने साम्राज्य का विस्तार करने की कला सिखाते हैं।

ध्यान अपनी आत्मा के साम्राज्य का विस्तार करने, अपनी चेतना का विस्तार करने, पूरे आकाश को छूने की कला है। ध्यान दूसरा चरण है। जैसे हम एक बच्चे को बुद्धि सिखाते हैं, वैसे ही उसे ध्यान भी सिखाएँ।

जैसे एक बच्चा विज्ञान समझता है, वैसे ही उसे धर्म भी समझना चाहिए और जैसे-जैसे उसका मस्तिष्क विकसित होता है, उसका हृदय भी प्रबुद्ध होना चाहिए। बुद्धि की सारी महिमा ध्यान पर निर्भर है, इसीलिए आइंस्टीन के पास बुद्ध जैसी बुद्धि नहीं हो सकती। क्योंकि बुद्ध के पास केवल बुद्धि का बाहरी जाल ही नहीं है, उनके भीतर भी ध्यान का दीप जल रहा है। बुद्धि भीतर के ध्यान के दीप से प्रकाशित होती है।

इसलिए, बुद्धि ने जो भी गलत किया है, वह अब नहीं कर पाएगी। ध्यान का दीप उसे लगाए रखेगा, ध्यान का दीप उसे हमेशा राह दिखाता रहेगा। वह बुद्धिमान ध्यान ही अंतर का स्वामी है।

शांति और सद्भाव को बढ़ावा देना आचार्य रजनीष का संपूर्ण ज्ञान ध्यान और प्रेम पर आधारित है। शांति और सद्भाव बनाए रखने के लिए प्रेम और ध्यान की ओर मुड़ें। विश्व शांति सुनिश्चित करने के लिए, व्यक्ति को मन, शरीर और सामाजिक संपर्क की शांत अवस्था में होना चाहिए। सच्ची शांति प्राप्त करने के लिए, व्यक्ति को पहले आंतरिक परिवर्तन से गुजरना होगा। मानसिक अभ्यास या शांति और आराम से जीवन जीने के तरीके के बारे में ज्ञान प्राप्त करके आंतरिक शांति प्राप्त करना असंभव है। आधुनिक दुनिया में शांति लाने में सिद्धांत का कोई स्थान नहीं है। पाखंडी मन को शिक्षित करके और शब्दों की शक्ति का उपयोग करके, हमारे सभी शैक्षणिक संस्थान विश्व शांति का आधार प्रदान करते हैं। वैश्विक जनसंख्या को अपनेपन का एहसास होता है। एक विस्तारित परिवार की तरह। बेशक, तकनीकी प्रगति और अनुसंधान ने इसे संभव बनाया और हमारी महत्वाकांक्षा को पूरा किया। विभिन्न देशों के लोग कमोबेश दूसरे देशों की आंतरिक और बाहरी गतिविधियों से अवगत हैं। मीडिया के कारण, सच्चाई जल्दी सामने आ जाती है और हमें सच्चाई जानने के लिए एक जगह से दूसरी जगह जाने में बहुत पैसा या समय खर्च नहीं करना पड़ता है। हालाँकि दुनिया भर में साक्षरता दर बढ़ रही है, लेकिन जीवन और संपत्ति से जुड़े सुरक्षा के मुद्दे सभी देशों के नागरिकों को परेशान कर रहे हैं। नेता ऊपर से नीचे तक चिल्ला रहे हैं और पुजारियों से लेकर भिखारियों तक, हर कोई अपना अस्तित्व सुनिश्चित करने के लिए सहायता मांग रहा है। जहाँ हर कोई वैश्विक बंधुत्व में विश्वास करने का दावा करता है, वहीं हम लगातार जाति संगठन बना रहे हैं और अलगाव की माँग कर रहे हैं।

आचार्य रजनीष का शैक्षिक दर्शनः आनंदमय जीवन के लिए प्रेरणा का दिलचस्प स्रोत हम ऐतिहासिक सापेक्षवादी नहीं हो सकते क्योंकि हम सभ्य प्राणी हैं। हम अतीत की जानकारी का उपयोग वर्तमान में अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कर सकते हैं। प्रारंभिक ऐतिहासिक आँकड़े नए प्रकार के शोध के लिए उपयोगी होंगे।

मानव मन स्वाभाविक रूप से अतीत की जानकारी का रिकॉर्ड रखता है। आचार्य रजनीष तर्क के सही उपयोग पर ध्यान केंद्रित करते हैं ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि जीवन में किसी चीज़ के महत्व के आधार पर उसे अपनाया जाना चाहिए या नहीं। यदि कोई व्यक्ति अत्यधिक मात्रा में महत्वहीन जानकारी जमा करता रहता है, तो उसका मन कूड़ेदान से कम नहीं होगा।

एक पुनर्जागरण पुरुष होने के नाते, हम हर काम में निपुण होना पसंद करते हैं। कृष्णमूर्ति, गांधी, विवेकानंद और अन्य आध्यात्मिक नेताओं के अनुसार, यह सब हानिकारक भी है। आजकल, किसी विषय पर दी गई जानकारी की सत्यता का पता लगाना बेहद मुश्किल है। स्रोतों के आधार पर, जानकारी बदल सकती है। परिणामस्वरूप, हमें उन समाचार स्रोतों पर भरोसा करना चाहिए जिन पर हम भरोसा कर सकें और साथ ही अधिकृत प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित साहित्य पर भी। हम अंततः सिद्धि और संतुष्टि तभी प्राप्त करेंगे जब हम अपनी मानसिक क्षमताओं का उपयोग वैध अन्वेषण के लिए करेंगे, जिससे मानसिक शांति सुनिश्चित होती है। प्रतियोगिताएँ जीतने के बजाय जीवन जीने का तरीका जानने से ही हमारी आंतरिक शांति में सुधार हो सकता है, अन्यथा यह बेचैनी का कारण बनेगा।

शिक्षा प्रक्रिया में भाषाएँ शामिल होती हैं। प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम दो भाषाएँ बोलनी आनी चाहिए, जिनमें से एक उसकी मातृभाषा और दूसरी

अंग्रेजी होनी चाहिए। आचार्य रजनीष का शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण शिक्षा के पुराने मूल्यों और पारंपरिक शिक्षा का विरोध करना था। वे शिक्षा प्रणाली को हर कोण से, गलतियों और समाधानों से समझाते हैं और इस शिक्षा को वास्तविक शिक्षा कैसे बनाया जाए, इस पर नए विचार और प्रस्ताव भी देते हैं। मन को इतना मुक्त रखते हुए कि जब विद्यार्थी शिक्षा लेकर बाहर आए, तो वह बिना किसी पूर्वाग्रह के एक स्वच्छ, शुद्ध साधक हो।

स्वतंत्रता एक यात्रा है, ऊँचाइयों तक पहुँचने के लिए, व्यक्ति खुद को आगे बढ़ाता है, कुछ भी पीछे नहीं छोड़ता, और तब मुक्ति होती है। आचार्य रजनीष कहते हैं कि एक दिन आंतरिक चरित्र को शुद्ध करना ही होगा। अशुद्धियों को अग्नि से जलाया जा सकता है और व्यक्ति स्वयं से ऊपर उठ सकता है। आचार्य रजनीष इस बात पर ज़ोर देते हैं कि मुक्ति की यह प्रक्रिया शिक्षा द्वारा सिखाई जाती है।

आचार्य रजनीष शिक्षा का अर्थ “तमसो मा ज्योतिर्गमय“ बताते हैं। आचार्य रजनीष उपनिषद के लेखक से सहमत हैं जो ईश्वर से प्रार्थना करते हैं, “हे ईश्वर, हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो!“ आचार्य रजनीष कहते हैं कि यही शिक्षा का वास्तविक अर्थ है । जब वे अंधकार से प्रकाश की ओर बात करते हैं, तो इसका अर्थ अज्ञान से ज्ञान की ओर है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अज्ञान, अंधकार की तरह, समझ से परे है और जिस प्रकार अंधकार का एकमात्र उपाय प्रकाश है, उसी प्रकार अज्ञान भी समझ से परे है। इसका उपाय ज्ञान है। मनुष्य अचेतन में अंधकार में रहता है, और मनुष्य प्रकाश से भरने में सक्षम है। आचार्य रजनीष का मानना है कि “प्रकाश है, उसे जागृत करना होगा। चेतना है पर उसे जागृत करना होगा“।

"शिक्षा का अर्थ है बाहर निकालना" में मुख्य शब्द आचार्य रजनीष शिक्षा का सही अर्थ समझाते हैं कि 'शिक्षा' शब्द का अर्थ है बाहर निकालना। आचार्य रजनीष कहते हैं, "जब आप कुएँ से पानी निकालते हैं तो वह शिक्षा है, ठीक वैसे ही जैसे जब आप उसे अपने केंद्र से निकालते हैं तो वह शिक्षा है"। पानी पहले से ही मौजूद है। सही प्रकार की शिक्षा उसे बाहर निकालती है और फिर प्यास बुझा सकती है। आचार्य रजनीष के शब्दों में, "शिक्षा का अर्थ है बीज का अंकुरण।" आचार्य रजनीष कहते हैं कि आपके अंदर जो कुछ भी है उसे बीज के रूप में जानना चाहिए। उसे खिलने का पूरा अवसर दिया जाता है। इससे व्यक्ति को सही आकार मिलता है।

व्यक्ति एक फूल बन जाएगा। आचार्य रजनीष के मुख्य शब्दों में, "शिक्षा का अर्थ है स्वयं पर और अस्तित्व पर विश्वास।"

आचार्य रजनीष कहते हैं कि वास्तविक शिक्षा हमें यह स्वीकार करने में मदद करती है कि सभी एक जैसे नहीं हैं, बल्कि अलग हैं, अपने तरीके से विशेष हैं। शिक्षा यह विश्वास पैदा करती है कि अस्तित्व की विभिन्न संभावनाएँ हैं और उन्हें विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। "शिक्षा चुनौतियों को स्वीकार करने का साहस सिखाती है।" वह बताते हैं कि मनुष्य भय से पंगु हो जाता है। भय परिवर्तन को असंभव बना देता है। आचार्य रजनीष बताते हैं, "भय ज्ञात को बाँधता है और अज्ञात की यात्रा को रोकता है, हालाँकि जीवन में सब कुछ अज्ञात है, जो कुछ भी जानना और प्राप्त करना है वह अज्ञात है।" लेकिन भयभीत मन हमेशा ज्ञात से चिपका रहता है, इसलिए शिक्षा का एक पक्ष है जो निर्भयता सिखाता है। वह भय के दूसरे पक्ष पर ध्यान केंद्रित करते हैं जहाँ लोभ है, सम्मान, शक्ति, धन, प्रतिष्ठा, सफलता का लोभ।

आचार्य रजनीष का मानना है कि वर्तमान शिक्षा अहंकार के विकास पर केंद्रित है। मुख्य शब्दः "शिक्षा व्यक्ति को विकसित होने और अहंकार को त्यागने में सक्षम बनाती है।" आचार्य रजनीष बताते हैं कि शिक्षा को व्यक्ति को महान बनने में मदद करनी चाहिए और उसके मन को किसी भी समय इसे त्यागने के लिए तैयार करना चाहिए। वे कहते हैं, "आपको अपने व्यक्तित्व में अहंकार को बनाए रखना चाहिए। क्योंकि अगर आप इसका इस्तेमाल करते हैं तो यह अच्छा है, लेकिन आपको इसे रोकने की तकनीक भी पता होनी चाहिए।" आचार्य रजनीष प्रेम को मुख्य शब्द मानते हैं। "असली शिक्षा प्रेम की शिक्षा है।" उनके अनुसार, असली शिक्षा प्रेम पर आधारित होनी चाहिए, ज्ञान पर नहीं। उन्होंने कहा, "असली शिक्षा आपको ज्ञान नहीं देगी, बल्कि पहले आपके हृदय को तैयार करेगी, यह आपको प्रेम और जीवन के लिए आवश्यक ज्ञान देगी, लेकिन वह दूसरी बात है।" असली शिक्षा प्रेम देती है, सिर्फ़ ज्ञान नहीं, बल्कि आपके जीवन के लिए, क्योंकि प्रेम के बिना जीवन अधूरा है। मुख्य शब्द है "शिक्षा जीवन और मृत्यु के लिए है।" आचार्य रजनीष ने शिक्षा को दो भागों में विभाजित किया है। उनके अनुसार, मृत्यु की शिक्षा और जीवन की शिक्षा अलग-अलग हैं। प्रत्येक व्यक्ति को विश्वविद्यालय दो बार जाना चाहिए। पहली बार जीवन जीना सीखने के लिए और दूसरी बार अंत तक पहुँचने के लिए।

यही पूर्ण शिक्षा है। इसके लिए आचार्य रजनीष यह सुझाव देते हैं। प्रत्येक विश्वविद्यालय का दोहरा ढाँचा होना चाहिए - एक युवाओं के लिए जो जीवन में प्रवेश कर रहे हैं। दूसरा उन बुजुर्गों के लिए जो यह सोच रहे हैं कि कैसे आगे बढ़ना है मृत्यु के अज्ञात संसार की ओर। आचार्य रजनीष कहते हैं कि जो शिक्षा जीवन और मृत्यु के बारे में नहीं बताती, वह अधूरी है। आचार्य रजनीष के तत्व में शिक्षा की अवधारणा का विश्लेषण करने के बाद, इसकी प्रासंगिकता को समझने का प्रयास किया गया है। आचार्य रजनीष के अनुसार, शिक्षा की अवधारणा में, शिक्षा व्यक्ति को अंत तक मुक्त करती है। विद्या या विमुक्ति, यह स्वीकार किया गया है कि यदि कोई व्यक्ति शिक्षित है तो केवल शिक्षा ही उसे पूर्वाग्रहों, पुरानी मान्यताओं, अंधविश्वासों और आडंबरों से मुक्त कर सकती है। आचार्य रजनीष का मानना है कि शिक्षा व्यक्ति का अंकुरण है। आचार्य रजनीष का मानना है कि एक बच्चा एक बीज की तरह होता है, वह शिक्षा के माध्यम से ही अंकुरित होता है और फूल बनता है, यह शिक्षा पर निर्भर करता है कि वह किस प्रकार का फूल बनाती है। आचार्य रजनीष की शिक्षा परम लक्ष्य मुक्ति पर केंद्रित है। आजीविका के बारे में सीखना शिक्षा का उद्देश्य नहीं है। उनका मानना था कि सच्ची शिक्षा ज्ञान प्राप्त करने में मदद करती है क्योंकि यह व्यक्ति को अधिक सचेत, अधिक शांत, अधिक जागरूक और अधिक भावुक बनाती है। शिक्षा निश्चित रूप से मुक्ति की एक प्रक्रिया है। जब व्यक्ति स्वयं को जान लेता है तो वह मुक्ति है क्योंकि उसके बाद करने के लिए कुछ नहीं बचता। आचार्य रजनीष वर्तमान शिक्षा की आलोचना करते हुए कहते हैं कि यह दूसरों से आगे निकलना सिखाती है, जो शिक्षा के उद्देश्य के रूप में प्रकट हो रहा है, लेकिन हमेशा कोई न कोई ऐसा होता है जो आपसे आगे होता है। आचार्य रजनीष कहते हैं कि वास्तविक शिक्षा शांति और राजनीति की इस दुनिया में जाना नहीं सिखाती, बल्कि यह सिखाती है कि अपने भीतर कैसे जाएँ। यह आंतरिक यात्रा सिखाती है।

यदि ध्यान आत्मा की शिक्षा है, तो पहले ध्यान सिखाया जाना चाहिए। यह शिक्षा वास्तविक अर्थ को सामने लाती है। आचार्य रजनीष कहते हैं कि शिक्षा को ज्ञान का प्रसार अवश्य करना चाहिए। उसे बंधन नहीं फैलाना चाहिए।

"ज्ञान वह है जहाँ मन मुक्त हो"। जहाँ शिक्षा में ज्ञान का प्रसार होगा, वहाँ शिक्षा मुक्त होगी और वह शिक्षा उपयोगी होगी। आचार्य रजनीष के अनुसार शिक्षा के उद्देश्यों का विश्लेषण करने के बाद, शोधकर्ता ने इसकी प्रासंगिकता को देखने का प्रयास किया है। आचार्य रजनीष के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य वह है जो मुक्त करे।

प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक, शिक्षा का उद्देश्य यही रहा है कि केवल वही सच्ची शिक्षा है जो व्यक्ति को अनावश्यक चीजों और धारणाओं से मुक्त करे। शिक्षा वह है जो व्यक्ति के मन, हृदय और आत्मा को मुक्त करती है। आचार्य रजनीष का मानना है कि शिक्षा भविष्य की ओर उन्मुख होनी चाहिए। आचार्य रजनीष का मानना था कि ध्यान भी शिक्षा का एक हिस्सा होना चाहिए! क्योंकि इससे बच्चे के मस्तिष्क का सही विकास होगा। आजकल स्कूलों में सुबह योग किया जाता है। इसका कारण यह है कि बच्चा स्वस्थ रहे और उसका दिमाग भी तेज रहे। आचार्य रजनीष कहते हैं कि शिक्षा आत्मा को तृप्त करने वाली होनी चाहिए। इसके अलावा, कोई अन्य माध्यम नहीं है जो आत्मा को पूर्णता प्रदान कर सके। ज्ञान मनुष्य के भीतर ही है।

आचार्य रजनीष के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य आंतरिक समृद्धि प्रदान करना है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति भौतिक समृद्धि प्राप्त कर सकता है, लेकिन आंतरिक समृद्धि प्राप्त करना भौतिक समृद्धि जितना आसान नहीं है, इसलिए शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को आंतरिक समृद्धि प्रदान करना है। आचार्य रजनीष की आर्ट ऑफ़ लिविंग के मूल सिद्धांतों में माता-पिता का मार्गदर्शन, वास्तविक शिक्षा, जिज्ञासु मन, व्यक्तित्व, यौन शिक्षा, खेल, हास्य और ध्यान शामिल हैं। किशोरों और युवा वयस्कों के लिए एक संपूर्ण जीवन जीने के लिए ये आवश्यक हैं। उनकी जीवन शैली जोखिम भरे जीवन को प्रोत्साहित करती है क्योंकि जोखिम व्यक्ति की संपूर्ण चेतना को जागृत करता है।

पालन-पोषण की कला, जीवन जीने की कला का समर्थन करती है, जो जीवन के प्रारंभिक और मध्य चरणों से जुड़ी है। इस प्रकार आचार्य रजनीष की जीवन जीने की कला, मृत्यु की कला की आधारशिला का काम करती है, जो उनकी शिक्षा के दृष्टिकोण का अंतिम घटक है। किशोरों की शिक्षा के संबंध में, आचार्य रजनीष इस बात पर ज़ोर देते हैं कि छात्रों को हमेशा सच्चा और ईमानदार रहना चाहिए, चाहे इसके लिए उन्हें कोई भी कीमत चुकानी पड़े। उन्हें अपने माता-पिता के साथ हर बात पर खुलकर और निडरता से बात करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

जब किशोर अपने माता-पिता के पास ईमानदारी, निष्ठा और खुले दिल से जाते हैं, तो यह उनके माता-पिता को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करता है। इस अवस्था में शिक्षा उन कई मुद्दों में से एक है जो किशोरावस्था के दौरान विशेष रूप से संवेदनशील होते हैं क्योंकि यह एक महत्वपूर्ण अवस्था है। वास्तव में, शिक्षा प्रणाली को इस तरह से स्थापित किया जाना चाहिए कि उसे शुरू से ही अपने माता-पिता, अपने स्कूल और अपने विश्वविद्यालय से मार्गदर्शन मिले। ध्यान रखें कि सब कुछ एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है, जिसमें वे चीज़ें भी शामिल हैं जो विपरीत लगती हैं। एक, उसे अपने मन में यह पक्का कर लेना चाहिए कि मैं अंदर से भी वैसा ही हूँ जैसा बाहर से दिखता हूँ। तभी वह एक संपूर्ण व्यक्ति बन पाएगा। हमारी संस्कृति व्यक्ति के व्यक्तित्व को आकार देती है, लेकिन उसे बनाती नहीं।

2. निष्कर्ष

आचार्य रजनीष का दर्शन विचारोत्तेजक और रोचक है, लेकिन यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि यह शिक्षा पर एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो किसी राष्ट्र की वास्तविक आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के अनुकूल नहीं हो सकता है। यह व्यक्तिगत विकास और आध्यात्मिक विकास पर नई अंतर्दृष्टि और विचार प्रदान करता है। यह संभव है कि वे एक प्रगतिशील शिक्षा प्रणाली विकसित करने के जटिल मुद्दों और आवश्यकताओं को तुरंत संबोधित न करें। इसे आचार्य रजनीष के शिक्षा दर्शन की विशेषताओं को शामिल करके, जैसे समग्र विकास, आत्म-जागरूकता और व्यक्तिगत परिवर्तन को प्रोत्साहित करके, बढ़ाया जा सकता है। हालाँकि, यह सुनिश्चित करने के लिए कि इसे एक प्रगतिशील शिक्षा प्रणाली के ढांचे के भीतर प्रभावी ढंग से लागू किया जाए, इसमें सावधानीपूर्वक संशोधन और नीति में वर्णित व्यापक उद्देश्यों और रणनीतियों के साथ संरेखण की आवश्यकता होगी।

इसे अनुकूलित और संरेखित करना एक जटिल प्रक्रिया होगी। इसलिए आचार्य रजनीष मानवीय तर्क को वास्तविकता तक पहुँचने का सबसे अच्छा तरीका मानते हैं। विज्ञान गहन जाँच और सहायक आँकड़ों का परिणाम है। आचार्य रजनीष के अनुसार, इस तरह से काम करने से आंतरिक शांति को बढ़ावा मिलता है और आंशिक वास्तविकता भी अस्तित्वहीन वास्तविकता से बेहतर बन जाती है। उनके लिए, किसी भी चीज़ या किसी भी धारणा पर विश्वास करना वास्तविकता से बचना या गलत जानकारी प्राप्त करना है। चूँकि सिद्धांत केवल मन की जिज्ञासा को संतुष्ट करता है, इसलिए वे केवल सिद्धांत पर ही विश्वास नहीं करते। आचार्य रजनीष वर्तमान शिक्षा प्रणाली की आलोचना करते हुए इसे "अतीत-उन्मुख" बताते हैं। हमारे सभी सिद्धांत, विचार और आदर्श अतीत से लिए गए हैं। कोई भी विकासात्मक रचनात्मक गतिविधि हमेशा भविष्य-उन्मुख होती है। शिक्षक, नेता, धर्म, राज्य और समाज द्वारा बच्चे पर पुरानी मान्यताएँ और विचार थोपे जाते हैं। आचार्य रजनीष के अनुसार, वास्तविक शिक्षा "प्रतिस्पर्धा" नहीं, बल्कि "सहयोग" सिखाएगी। आज, शिक्षक ने शिक्षा प्रणाली में अपनी पूर्व स्थिति और महत्व खो दिया है या खो रहा है और उसकी भूमिका पश्चिमी हितों के लिए प्रणाली संचालकों द्वारा सीमित की जा रही है।

संदर्भ

गैल्वन, जे. एल., और गैल्वन, एम.(2019).   साहित्य समीक्षा लेखनः सामाजिक और व्यवहार विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए एक मार्गदर्शिका।

हदुले धनराज सुभाष. (2019). भगवान रजनीश आचार्य रजनीष यांचे शिक्षण विषयक विचार एक तात्विक अभ्यास. स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय।

एम, एस., बंसल, आर., होथी, बी.एस., अठावले, वी.ए., महाजन, वाई., और अनवर, एस. (2019). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और शिक्षा पर इसके प्रभाव की समीक्षा। अंतर्राष्ट्रीय शोध प्रकाशन और समीक्षा पत्रिका, खंड (5), अंक (7), जुलाई (2024), पृष्ठ दृ 4034-4037 4037 शिक्षा मंत्रालय। (2020) । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। 7 जुलाई, 2023 को पुनःप्राप्त।

ओ. (2006, 3 जुलाई) । समझ की पुस्तकः स्वतंत्रता के लिए अपना रास्ता खुद बनाएँ। ीजजचेः//कवप.वतह/10.1604/9780307336941

आचार्य रजनीष (1997) शिक्षा में क्रांति, न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स, न्यू आचार्य रजनीष (2008) शिक्षा में क्रांति, रेवेल पब्लिशिंग हाउस, पुणे।

आचार्य रजनीष (2010) शिक्षाः नए प्रयोग, आचार्य रजनीष इंटरनेशनल फाउंडेशन, पुणे।

आचार्य रजनीष, (1997), भारत के ज्वलंत प्रश्न, रेवेल पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड, पुणे।
आचार्य रजनीष, (2000) गीता दर्शन भाग-एक, रेवेल पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड, पुणे।
आचार्य रजनीष, (2010) जीवन रहस्य, आचार्य रजनीष मीडिया इंटरनेशनल, पुणे।
आचार्य रजनीष, ओ. (1997, 1 दिसंबर)। सबसे बड़ी चुनौती, सुनहरा भविष्य। ीजजचेः//कवप.वतह/10.1604/9788120719453
पटेल एन (2006), “श्री रजनीश के शैक्षिक विचारों का एक अध्ययन“, अप्रकाशित शोध, वीर निर्मला,दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय।169
प्रजापति एन (1992), रजनीशजी के शैक्षिक विचार, एक अध्ययन, अप्रकाशित शोध, उत्तर गुजरातविश्वविद्यालय।
प्रजापति, ए (2011), “आचार्य रजनीष की चुनिंदा पुस्तकों में शिक्षा का एक विश्लेषणात्मक दर्शन“, अप्रकाशित शोध, पाटन विश्वविद्यालय।
रजनीश (1980), द डिसिप्लिन ऑफ ट्रांसेंडेंस, खंड 4, रजनीश फाउंडेशन, पुणे।
रजनीश (1980), द सीक्रेट, रजनीश फाउंडेशन, पुणे।
रजनीश (1980), द सन बिहाइंड द सन, रजनीश फाउंडेशन, पुणे।
रजनीश (1981) शांत रहो और रजनीश फाउंडेशन, पुणे को जानो।
रजनीश (1981) खोने के लिए कुछ नहीं, बस अपना सिर, रजनीश फाउंडेशन, पुणे।
रजनीश (1981), फिलोसोफी पेरेनिस, खंड 2, रजनीश फाउंडेशन, पुणे।
रजनीश (1985) मृत्यु से मृत्युहीनता, रेवेल पब्लिशिंग हाउस, पश्चिम जर्मनी।
रजनीश (1987), द इनविटेशन, रेवेल पब्लिशिंग हाउस, पश्चिम जर्मनी।
रजनीश, (1999), द लास्ट ट्रीटमेंट खंड 5, रेवेल पब्लिशिंग हाउस, पुणे।
रॉय, एम. (2022) । भारत में राष्ट्रीय शैक्षिक नीति 2020 (एनईपी 2020) के समग्र और बहु-विषयक दृष्टिकोण पर एक आलोचनात्मक अध्ययन। आईजेएफएमआर-अंतर्राष्ट्रीय बहु-विषयक अनुसंधान जर्नल, 4(6)।